पदपरिचय के कुछ नमूने

(1) मेरी छोटी बहन अभी स्कूल से आयी है।

मेरी - मैं की मेरी विकारी शब्द, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, स्त्रीलिंग, एक वचन, संबंध कारक , से संबंधित।

छोटी - विशेषण, गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'बहन' विशेष्य से संबंध

बहन - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक , 'आयी है' क्रिया का कर्ता।

अभी - अब + ही = अभी, क्रिया विशेषण, कालवाचक, 'आयी है' का क्रिया विशेषण

स्कूल से - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अपादान कारक

आयी है - अकर्मक क्रि या, स्त्रीलिंग, कर्तृवाच्य, कर्तरी प्रयोग, आसन्न भूतकाल, अन्य पुरुष, एक वचन 'बहन' कर्ता से संबंधित

(2) अहा! आप और मैं परीक्षा में पास हो गये।

अहा! - द्योतक, हर्षवर्धक (विस्मयादि बोधक)

आप - सर्वनाम, पुरुषवाचक , मध्यम पुरुष, एक वचन, कर्ता कारक, पास हो गये क्रिया से संबंधित।

और - योजक , संयोजक , 'आप' और 'मैं' को मिलाता है।

मैं - पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एक वचन, कर्ता कारक, 'पास हो गये' क्रिया का कर्ता।

परीक्षा में - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

पास हो गये - संयुक्त क्रिया, अकर्मक , कर्तृवाच्य, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, बहुवचन, उत्तम पुरुष, 'आप और मैं' इसके कर्ता हैं।

(3) समझदार लड़के किसीसे नहीं लड़ते

समझदार - विशेषण, गुणवाचक , विशेष्य, लड़के का विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन।

लड़के - संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'समझदार' विशेषण का विशेष्य 'लड़ते' क्रिया का कर्ता।

किसीसे - सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रथम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक ।

नहीं - क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, 'लड़ते' क्रिया का विशेषण।

लड़ते - सकर्मक क्रिया, कर्तृवाचक, सामान्य वर्तमानकाल, पुल्लिंग, अन्य पुरुष, बहुवचन, लड़ते इसका कर्ता।

4. राम अपने बड़े भाई के साथ दिल्ली गया।

राम - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन 'गया' क्रिया से संबंध

अपने - सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम, राम के भाई में संबंधित, पुल्लिंग आद सूचक

बड़े भाई - संज्ञा, जातिवाचक पुल्लिंग राम से संबंधित

के साथ - संबंध बोधक राम और बड़े भाई से संबंधित

दिल्ली - संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्री लिंग गई से संबंधि।

गया - जा, मूल - धातु अकर्मक क्रिया, एक वचन, पुल्लिंग, कर्तुवाच्य, कर्तारी प्रयोग, सामान्य भूतकाल राम कर्ता के संबंधित

पदपरिचय दीजिए:-

1. उसने एक गीत गाया।
2. राम ने रावण को मारा।
3. शेर जंगल में रहता हैं।
4. माँ ने बच्चे को खिलौना दिया है।
5. तोता पेड़ पर बैठा है।
6. कमला मेरे घर आई।
7. राजा ने घोड़ा खरीदा।
8. उसने घोड़ा बेचा।
9. मैंने मोहन को बुलाया।
10. मेरा छोटा भाई कल मैसूर से यहाँ आया।

11. गर्मी में ठंडे जल में नहाने से आनंद हाता हैं।

12. कंबर ने तमिल में रामायण की रचना की है।

13. साहसी पुरुष प्रत्येक कार्य में सफल होगा।

14. मैं जल्दी यहाँ से निकलूँगा।

निबंध

प्रय त्योहार, प्रिय नेता, कोई दान (नेत्र दान/रक्तदान), प्रदूषण, समय का सदुपयोग, समाचार पत्र, पुसतकालय, बेकारी समस्या, विद्यार्थी जीवन, दहेज प्रथा, स्वदेश प्रेम, अनुशासन, स्वतंत्र भारत में नारी का स्थान, मनोरंजन के आधुनिक साधन, विज्ञान के चमत्कार, भारत में कम्प्यूटर क्रांति।

पत्र लेखन

1. नौकरी के लिए आवेदन पत्र

2. छात्रवृत्ति पाने के लिए प्रार्थना पत्र

3. किसी यात्रा का वर्णन / किसी खेल का वर्णन

4. पुस्तक मँगवाना

5. शिकायत पत्र

6. बधाई पत्र

7. शिक्षा कर्ज प्राप्ति के लिए प्रार्थना पत्र

कार्यालय आदेश (Office Order)

कार्यालय आदेश किसी भी मंत्रालय, संबद्ध विभाग, अनुभाग, कार्यालय के कर्मचारियों के लिए समय-समय पर निकाले गये आदेशों की सूचना है। कार्यालयों की स्थानीय व्यवस्था, अनुशासन आदि इसके मूल विषय हैं। अनुभागों या अधिकारियों के बीच कार्य-बितरण, पदोन्नति, पदावनति, कर्मचारियों की नियुक्ति, तैनाती, स्थानांतरण, छुट्टियाँ, नये पदों का सृजन, कर्मचारियों को अनुशासनहीनता के आरोप में चेतावनी आदि कार्यालय आदेश मुख्य विषय हैं। यह किसी सक्ष्म अधिकारी के द्वारा निकाला जाता है, जिसका अनुपालन करना आवश्यक होता है। यह एकव्यक्ति या सभी व्यक्तियों के लिए होता है।

कार्यालय आदेश लिखने की विधिः-

1. कार्यालय आदेश में औपचारिकता नहीं होती।

2. इसमें अन्य पुरुष का प्रयोग किया जाता है।

3. कार्यलय आदेश में नीचे बाई ओर उन व्यक्तियों का नाम निर्देश रहता है, जिनके लिए वह निकाला गया है।

4. कार्यालय आदेश में सबसे ऊपर भरत सरकार या राज्य सरकार, मंत्रालय का नाम, बाई ओर पत्र-संख्या और उसके बाद विषय रहता है।

5. यदि किसी को पत्र भेजना है तो पत्र की समाप्ति पर बाई ओर 'प्रतिलिपि' लिखते हैं।

6. इसका प्रारूप सीधा और सरल होता है। आदेश स्पष्ट और निश्चयात्मक होता है।

7. यह वरिष्ठ अधिकारी द्वारा कनिष्ठ अधिकारी या कर्मचारी को लिखा जाता है।

श्री घनश्याम पांडेय का अर्जित अवकाश स्वीकार करते हुए कार्यालय आदेश का आलेखन कीजिए।

क्रम संख्या 229/प्र/2014/प्रशासन

भारत सरकार

नई दिल्ली

दिनांक : 20 मई, 2014

श्री घनश्यामदास पांडेस का दिनांक 17 जनवरी, 2014 से 20 मार्च, 2014 तक का अर्जित अवकाश स्वीकार कर लिया गया है।

ह.।XXXX

अवर सचिव

भारत सरकार

प्रतियाँ

1. श्री घनश्यामदास पांडेय

   मूल्य नियंत्रण अनुभाग

   निर्माण मंत्रालय, नई दिल्ली

2. नकदी तथा लेखा अनुभाग

   नई दिल्ली

विषय ग्रहण गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

गद्यांश -1

संसार के सभी देशों में शिक्षित व्यक्ति की सबसे पहली पहचान यह होती है कि वह अपनी मातृभाषा में दक्षता से काम कर सकता है। केवल भारत ही एक देश है जिसमें शिक्षित व्यक्ति वह समझा जाता है। जो अपनी मातृभाषा में दक्ष हो या नहीं किंतु अंग्रेज़ी में जिसकी दक्षता असंदिग्ध हो।

संसार के अन्य देशों में सुसंस्कृत व्यक्ति वह समझा जाता है जिसके घर में अपनी भाषा की पुस्तकों का संग्रह हो और जिसे बराबर यह पता रहे कि उसकी भाषा के अच्छे लेखक और कवि कौन हैं तथा समय-समय पर उनकी कौन-सी कृतियाँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत में स्थिति दूसरी है। यहाँ प्रायः घर में साज-सज्जा के आधुनिक उपकरण तो होते हैं किंतु अपनी भाषा की कोई पुस्तक या पत्रिका दिखाई नहीं पड़ती। यह दुरवस्था भले ही किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, किंतु यह सुदशा नहीं, दुरवस्था ही है और जब तक यह दुरवस्था कायम है, हमें अपने आप को, सही अर्थों में शिक्षित और सुसंस्कृत मानने का ठीक-ठीक न्यायसंगत अधिकार नहीं।

1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. असंदिग्ध होना शब्द का तातपर्य क्या है?

3. शिक्षित व्यक्ति की पहली पहचान क्या होती है?

4. सुसंकृत व्यक्ति कौन है?

5. भारत में किसे दक्ष व्यक्ति माना जाता है?

गद्यांश - 2

दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते हैं जो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं - सड़क पर ठेला लगानेवाला, दूधवाला, नगरनिगम का सफ़ाई कर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारा सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा, वेतन परंपरागत चलन और व्यवसाय के स्तर पर कुछ लोग स्तर पर कार्य करते हैं तो कुछ तथा कथित निम्न स्तर पर करते हैं। तो कुछ उच्च स्तर पर। एक माली के कार्य को सरकारी कार्यालय के किसी सचिव के कार्य से अति निम्न स्तर का माना जाता है। किंतु यदि यही अपने कार्य को कुशलता पूर्वक करता है और उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करता है। तो उसका कार्य उस सचिव के कार्य से कहीं बेहतर है जो अपने काम में ढिलाई बरतता है। तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं करता। क्या आप ऐसे सचिव को एक आदर्श अधिकारी कह सकते हैं? वास्तव में पद महत्वपूर्ण नहीं हैं। बल्कि महत्वपूर्ण होता है कार्य के प्रति समर्पण भाव और कार्य प्रणाली में पारदर्शिता।

1. गद्यांश का उचित शीर्ष दीजिए।

2. एक माली का कार्य सरकारी सचिव के कार्य से भी बेहतर कब माना जाता है?

3. कार्य प्रणाली में पारदर्शिता का तात्पर्य क्या है?

4. काम में ढिलाई बरतने पर क्या असर पड़ता है?

हिंदी में अनुवाद करें।

1. It is true no doubt that the greatest need of our nation today is discipline. But discipline is of two kinds one that is imposed from without, with the help of fear or greed another which one observes of his own free will for the accomplishment of his cherished goal. Of these, the first service to keep the show going, but is of no use to cultivate the moral strength necessary for the shaping of a new order and state.

2. There is very sweet water inside the coconut. People use the kernal of the coconut in many ways. The ripe kernel is dried. It is called "Kopra". It is pressed in the oil press and oil is extracted. Coconut oil is used for lighting lamps and as hair oil. Coconut tree leave are use for making mats and fibre is used to make mats, ropes, bags and many useful articles.

3. Education is not the amount of information that is put in your brain and riot there] undigested, all your life. We must have life building, man making character making assimilation of ideas. If education is identical with information libraries are great sages of the world and encyclopedias are rishis, truth, righteous conduct, peace, love and non-violence are the core universal values which can be identified as the foundation stone on which the value based education programme can be built up. These five are indeed universal values represent the five domains of human personality - intellectual , physical, emotional, psychological and spiritual.

पदों के नाम

अध्यक्ष	-	Chairman
प्रबंध निदेशक	-	Managing Director
सभापति/अध्यक्ष	-	President
उपसभापति/उपाध्यक्ष	-	Vice President
मुख्य महा प्रबंधक	-	Chief General Manager
उप प्रबंध निदेशक	-	Deputy Managing Director
सचिव	-	Secretary
निजी सहायक	-	Private Assistant
महा प्रबंधक	-	General Manager
मुख्य प्रबंधक	-	Chief Manager
प्रभारी अधिकारी	-	Office Incharge
सुरक्षा अधिकारी	-	Security Officer
पुस्तकपाल	-	Librarian
प्राचार्य	-	Principal
लेखा परीक्षक	-	Auditor
क्षेत्रीय प्रबंधक	-	Regional Manager
शाखा प्रबंधक	-	Branch Manager
लेखापाल	-	Accountant
अनुवादक	-	Translator
राजभाषा अधिकारी	-	Official Language Officer
रोकड़िया	-	Cash officer

लिपिक	-	Clerk
आशुलिपिक	-	Stenographer
जमा खाता	-	Savings Account
चालू खाता	-	Current account
विदेशी खाता	-	Foreign Account
बचत खाता	-	Savings deposit
जमाकर्ता	-	Depositor
नकद प्रदत्त	-	Cash paid
नकद प्राप्त	-	Cash received
गोपनीय	-	confidential
संस्वीकृत	-	Sanctioned
अनुमोदित	-	Approval
भुगतान किया गया	-	payment made
अन्तरित किया गया	-	Transfered
वाणिज्यिक बैंकिंग	-	Commercial banking
कृषि एवं ग्रामीण बैंकिंग	-	Agricultural and Rural Banking
विदेश विभाग	-	Foreign Department
मानव संसाधन विकास विभाग	-	Human Resources Development Department
विधि विभाग	-	Law Department
गृह मंत्रालय	-	Ministry of Home Affairs
वित्त मंत्रालय	-	Ministry of Finance
रक्षा मंत्रालय	-	Ministry of Defence
रेल मंत्रालय	-	Ministry of Railways

विदेश मंत्रालय	-	Ministry of External Affairs
सूचना और प्रसारण मंत्रालय	-	Ministry of Broadcasting
स्वास्थ्य मंत्रालय	-	Ministry of Health
युवा कल्याण मंत्रालय	-	Ministry of Youth Welfare
खाद्य, कृषि तथा सिंचाई मंत्रालय	-	Ministry of Food Agriculture and Irrigation
ऊर्जा मंत्रालय	-	Ministry of Energy
उद्योग मंत्रालय	-	Ministry of Industry
आकाशवाणी	-	All India Radio
आयकर विभाग	-	Income Tax Department
केंद्रीय तारघर	-	Central Telegraph Office
जीवन बीमा निगम	-	Life Insurance Corporation
उच्च न्यायालय	-	High Court
उच्चतमन्यायालय	-	Supreme Court
सचिवालय	-	Secretaroat
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	-	University Grands Commission
संघलोक सेवा आयोग	-	Union Public Service Commission
राष्ट्रपति	-	President
उपराष्ट्रपति	-	Vice Pqresident
प्रधान मंत्री	-	Prime Minister
मुख्य मंत्री	-	Chief Minister
राजयमंत्री	-	Ministry of State
सचिव	-	Secretary

सलाहकार	-	Advisor
अपर सचिव	-	Additional Secretary
संयुक्त सचिव	-	Joint Secretary
उपसचिव	-	Deputy Secretary
अवर सचिव	-	Under Secretary
अधीक्षक	-	Superintendent
लिपिक	-	Clerk
सहायक	-	Assistant
प्रबंधक	-	Manager
मैं सहमत हूँ	-	I agree
आज जारी करें	-	Issue today
उत्तर की प्रतीक्षा करें	-	A wait reply
यथा प्रस्तावित	-	As proposed
तदनुसार सूचित करें	-	Inform accordingly
अनुपोदित	-	approved
आवश्यक कार्रवाई करें	-	do the needful
सूचनार्थ	-	for information
विचारार्थ	-	for consideration
आदेश जारी कर दिया जाए	-	Orders may be issued
विचार किया जाए	-	May be confident
अनुमति दी जाए	-	May be permitted
प्रस्तुत करें	-	put up
मिसिल में रखें	-	Keep with file

समास

समास किसे कहते हैं?

समास का अर्थ है - 'संक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक पदों या शब्दों के योग को समास कहते हैं। जिन पदों या शब्दों के योग से समास बना है, उनमें से पहले पद को पूर्व पद और दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं।

अतः दो या अधिक पदों का अपने विभक्ति चिन्हों या अन्य प्रत्ययों को विलुप्तकर आपस में मिल जाना ही, समास है।

समास होने के पहले पदों के रूप को 'समास विग्रह' कहा जाता है। समास होने के बाद बने संक्षिप्त रूप को 'समस्त पद' कहते हैं।

उदाहरणः- 1. मोहन पथ से भ्रष्ट हो चुका है। 2. मोहन पथभ्रष्ट हो चुका है।

उपर्युक्त पहले उदाहरण में पथ से भ्रष्ट समास विग्रह है (पदों का विखरा हुआ रूप) और दूसरे उदाहरण में पथभ्रष्ट सामासिक पद (समस्तपद) है, जो विभक्तियों के लोप होने के बाद दोनों पदों के आपस में मिल जाने के बाद बना है।

नीचे कुछ समास विग्रह और समस्त पदों के उदाहरण दिए गए हैं - जैसे -

शक्ति के अनुसार यथा शक्ति (यहाँ पर विभक्ति चिन्ह 'के' का लोप होकर यथाशक्ति बना)

नीला कमल - नीलकमल (यहाँ 'आ' प्रत्यय का लोप होकर नीलकमल बना)

चार राहों का समूह - चौराहा (यहाँ पर संक्षेप होकर चौराहा बना)

पीला अम्बर - पीताम्बर (यहाँ दो पद पीला और अम्बर मिलकर पीताम्बर बना)

नाक और कान -नाक-कान (यहाँ दो पद के मध्य 'और' को हटाकर नाक-कान बना)

द्वन्द्व समास किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझइए।

जिस समास में दोनों पद प्रधान होता है। वहाँ द्वन्द्व समास होता है। समास विग्रह करते समय और, या, एवं आदि का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - सामासिक शब्द

माता-पिता —माता और पिता　　देश-विदेश–देश और विदेश

लंबा-चौड़ा–लंबा और चौड़ा　　लाभ-हानि–लाभ और हानि

नर-नारी–नर और नारी　　अमीर-गरीब–अमीर और गरीब

नर-नारी	नर और नार
भरा पूरा	भरा और पूरा
भला-बुरा	भला और बुरा
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
देवासुर	देव और असुर
राधाकृष्ण	राधा और कृष्ण
धनुर्वाण	धनुष और वाण
हरिशंकर	हरि और शंकर

जिस समास का पूर्व पद संख्यावाची विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समूह या समाहार का बोध होता है। जैसे

सामासिक शब्द	**विग्रह**
पंचवटी	पाँच वटों का समूह
नवग्रह	नवग्रहों का समूह
दोपहर	दोपहरों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
सप्तर्षि	सात ऋषियों का समाहार
सप्	सात दिनों का समाहार
षट्कोण	छह कोणों का समाहार
अठन्नी	आठ आनों का समाहार
त्रियुगी	तीन युगों का समाहार
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समाहार
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
नवरात्र	नौ रात्रि का समूह

तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
त्रिदेव	तीन देवताओं का समाहार

कर्मधारय समास किसे कहते हैं?

जिस समास में पूर्व पद विशेषण (उपमान) और दूसरा पद (उत्तर पद) विशेष्य (उपमेय) हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है। जैसेः-

सामासिक पद	विग्रह
प्रधानाध्यापक	प्रधान + अध्यापक
नीलकमल	नीला + कमल
पीताम्बर	पीला + अम्बर
महापुरुष	महान + पुरुष
बैलगाड़ी	बैलों से खींची जानेवाली गाड़ी
सत्याग्रह	सत्य के लिए अग्रह
कमलनयन	कमल के समान नयन
महाकवि	महान है जो कवि
नराधम	अधम है नर जो
सदधर्म	सत है धर्म जो
क्रोधग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
वचनामृत	वचन रूपी अमृत
मृगनयन	मृग के समान नयन
महारानी	महती रानी
परमेश्वर	परम् ईश्वर
नीलोत्पल	नीला उत्पल
कापुरुष	कायर पुरुष

चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख
चरण कमल	चरण रूपी कमल
परमानंद	परम है जो आनंद

कारक के आधार पर तत्पुरुष समास के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

कारक के आधार पर तत्पुरुष समस के छः भेद हैं।

कर्म तत्पुरुष -जिस समास के पूर्व पद में कर्म कारक(को) का लोप होता है, उसे कर्म तत्पुरुष कहते हैं। जैसे - शरणागत - शरण को आया हुआ। स्वर्ग-प्राप्त-स्वर्ग को प्राप्त आदि।

2. **करण तत्पुरुष** - जिस समास के पूर्व पद में करण कारक (से, द्वारा) का लोप होता है, उसे करण तत्पुरुष कहते हैं। जैसे -

तुलसीकृत	-	तुलसी द्वारा कृत।
हस्तलिखित	-	हाथ से लिखा हुआ।
इतिहास सम्मत	-	इतिहास से सम्मत।
काल प्रवाह	-	काल का प्रवाह
परमपरा प्राप्त	-	परम्परा से प्राप्त।
राज्यच्युत	-	राज्य से च्युत।

3. **सम्प्रदान तत्पुरुष** - जिस समास के पूर्व पद में संप्रदान कारक (के लिए) का लोप होता है, उसे संप्रदान तत्पुरुष कहते हैं। जैसे -

देश -भक्ति	-	देश के लिए भक्ति।
रसोई घर	-	रसोई के लिए घर।

4. **अपादान तत्पुरुष** - जिस समास के पूर्व पद में अपादान कारक (से) का लोप होता है, उसे अपादान तत्पुरुष कहते हैं। जैसे -

पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट
जन्मांध	-	जन्म से अंधा।

5. **अधिकरण तत्पुरुष** - जिस समास के पूर्व पद में अधिकरण कारक (में, पर) का लोप होता है, उसे अधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। जैसे -

आपबीती - अपने पर बीती।

पुरुषोत्तम- पुरुषों में उत्तम।

6. **संबंध तत्पुरुष** - जिस समास के पूर्व पद में संबंध कारक (का,के,की) का लोप होता है, उसे संबंध तत्पुरुष कहते हैं। जैसे -

राजपुरुष - राजा का पुरुष

घुड़दौड़ - घोड़ों की दौड़।

अव्ययीभाव समास को उदाहरण सहित समझाइए?

जिस समास में पहला पद अव्यय और दूसरा पद संज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

समास में पहला पद प्रधान होता है। जैसे :-

सामासिक शब्द	विग्रह
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन या दिन-दिन
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
भरपेट	पेट भर
प्रत्येक	एक-एक के प्रति
आजन्म	जन्म पर्यन्त
आजीवन	जीवनभर
यथासमय	समय के अनुसार
निर्भय	बिना भय का
मनमाना	मन के अनुसार
घड़ी-घड़ी	घड़ी के बाद घड़ी
प्रत्युपकार	उपकार के प्रति
प्रतिमास	प्रत्येक मास
अनुगुण	गुण के योग्य

आद्योपांत	आदि से अंत तक
अध्यात्म	आत्मा से संबंधित
प्रत्यंग	अंग-अंग
ारोक्ष	अक्षि के परे
प्रत्यक्ष	अक्षि के प्रति

वाक्य शुद्धि

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए:-

1. गोविंद के बहिन का नाम सुशीला है।
2. आप उसके घर को गए।
3. मेज में पुस्तक पड़ी है।
4. वह आपका घर कल आ सकेगा।
5. मैं स्कूल जाना चाहिए।
6. हम हमारे देश को प्यार करते हैं।
7. मंदिर की चारों ओर दुकाने हैं।
8. तालाब के अंदर छोटी-सी मंदिर है।
9. उसने अपने मित्र को एक-सो रुपया पूछा।
10. सभी उसको तारीफ करते हैं।
11. वह घर को जा रहा है।
12. वह प्रातःकाल के समय आया।
13. रोहन ने रोटी खाया।
14. श्रीकृष्ण के अनेकों नाम है।
15. मुझे मैसूर जानी पड़ेगी।
16. गुणशील चलती-चलती थक गए।

17. गोपाल गाना गाया।

18. श्याम काम किया।

19. मेरे को उसने बुलाया है।

20. सरला ने कहानी पढ़ा।

21. मोहन की पिताजी अस्वस्थ हैं।

22. हवा तेज बहने लगा।

23. उसका हाथ में मामूली चाकू था।

24. ग्यारहवीं शताब्दी का बात है।

25. वह दरवाजा खोला।

26. आप आपके घर जाइए।

27. तेरे को क्या हो गया है?

28. उसने बस वाले को पूछा।

29. तारकोल का सड़क चमक रही थी।

30. आप कल जरूर आओ।

31. आप कहे थे।

32. यह पाठ का नाम क्या है?

33. कई विद्यालय खुला।

34. साहित्य और जीवन का घोर संबंध है।

35. हिंदी शिक्षा का माध्यम बन चुका है।

36. सूर्य की किरणें चमक रहे हैं।

37. सुभाष चंद्र बोस महान नेता था।

38. वह पुस्तक लेकर भागता हुआ घर आया।

39. लड़के पढ़े करते हैं।

40. बैल और बकरे चर रही हैं।

41. बकरी ने बाधिन को देखी।

42. लता को गीत गानी है।

43. उसने परीक्षा दिया।

44. जो जन्म लेती है वह अवश्य ही मरती है।

45. मैंने को जाना है।

46. उस लड़का का क्या नाम है?

47. मज़दूरों की सभा हो रहा है?

48. यह दस रुपया का नोट है।

49. उनने आपसे क्या कहा?

50. आप अभी कहाँ जा रहे हो?

अलंकार

अलंकार जो साहित्य को अलंकृत करते हैं। संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में 'काव्य' शोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं।

अलंकार को दो भागों में विभाजित किया गया है:-

शब्दालंकार - शब्द पर आश्रित अलंकार

अर्थालंकार - अर्थ पर आश्रित अलंकार

शब्दालंकार- ये शब्द पर आधारित होते हैं।

प्रमुख शब्दालंकार हैं - अनुप्रास, यमक, श्लेष, पुनरुक्ति, वक्रोक्ति आदि।

अर्थालंकार - ये अर्थ पर आधारित होते हैं। प्रमुख अर्थालंकार है - उपमा, रूपक, उत्पेक्षा, प्रतीप, व्यक्तिरेक, विभावना, विशेषेक्ति, अर्थान्तरन्यास, उल्लेख, दृष्टान्त, विरोधाभास, भ्रांतिमान आदि।

उभयालंकार - उभयालंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनोंको चमत्कृत करते हैं।

1. अनुप्रास - जहाँ किसी वर्ण की अनेक बार क्रम से आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे भूरी-भूरी भेदभाव भूमि से भगा दिया। 'भ' की आवृत्ति अनेक बार होने से यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

2. यमक - जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और उसके अर्थ अलग-अलग हों वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे - सजना है मुझे सजना के लिए। यहाँ पहले सजना का अर्थ है - श्रृंगार करना और दूसरे सजना का अर्थ - नायक शब्द दो बार प्रयुक्त है, अर्थ अलग-अलग हैं। अतः यमक अलंकार है।

3. श्लेष - जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो, किंतु प्रसंग भेद में उसके अर्थ एक से अधिक हों, वहाँ श्लेष अलंकार है। जैसे -

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै मोती मानस चून।।

यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं - कान्ति, आत्म - सम्मान और जल। अतः श्लेष अलंकार है, क्योंकि पानी शब्द एक ही बार प्रयुक्त है तथा उसके अर्थ तीन हैं।

अर्थालंकारः-

1. उपमा - जहाँ गुण, धर्म या क्रिया के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है। जैसे : हरिपद कोमल कमल से। हरिपद (उपमेय) की तुलना कमल (उपमान) से कोमलता के कारण की गई। अतः उपमा अलंकार है।

2. रूपक - जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है। जैसे - अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी।

आकाश रूपी में उषा रूपी स्त्री तारा रूपी घड़े डुबो रही है। यहाँ आकाश पर पनघट का, उषा पर स्त्री का और तारा पर घड़े का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

3. उत्प्रेक्षा - उपमेय में उपमान की कल्पना या सम्भावना होने पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे - मुख मानो चंद्रमा है। यहाँ मुख (उपमेय) को चंद्रमा (उपमान) मान लिया गया है। यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है। इस अलंकार की पहचान मनु, मानो, जनु, जानो शब्दों से होती है।

4. विभावना - जहाँ कारण के अभाव में भी कार्य हो रहा हो, वहाँ विभावना अलंकार है। जैसे-

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।

वह (भगवान) बिना पैरों के चलता है और बिना कानों के सुनता है। कारण के अभाव में कार्य

होने से यहाँ विभावना अलंकार है।

5. भ्रान्तिमान - उपमेय में उपमान की भ्रान्ति होने से और तदनुरूप क्रिया होने से भ्रान्तिमान अलंकार होता है। जैसे

नाक का मोती अधर की कान्ति से, बीज दाडिम का समझकर भान्ति से,

देखकर सहसा हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है?

यहाँ नाक में तोते का और दन्त पक्ति में अनार के दाने का भ्रम हुआ है, यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

6. संदेह - जहाँ उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में संदेह बना रहे तथा निश्चय न हो सके, वहाँ संदेह अलंकार होता है। जैसे -

सारी बीच नारी है नारी बीच सारी है।

सारी ही की नारी है कि नारी की ही सारी है।

7. व्यतिरेक :- जहाँ कारण बताते हुए उपमेय की श्रेष्ठता उपमान से बताई गई तो, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है। जैसे -

का सरवरि तेहिं देउं मयंकू। चांद कलंकी वह निकलंक।।

मुख की समानता चंद्रमा से कैसे दूँ? चंद्रमा में तो कलंक है, जब कि मुख निष्कलंक है।

8. असंगतिः कारण और कार्य में संगति न होने पर असंगति अलंकार होता है। जैसे-

हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।

घाव तो लक्ष्मण के हृदय में हैं, पर पीड़ा राम को है, अतः असंगति अलंकार है।

9. प्रतीप - प्रतीप का अर्थ है उल्टा या विपरीत। यह उपमा अलंकार के विपरीत होता है। क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित, पराजित या हीन दिखाकर उपमेय की श्रेष्टता बताई जाती है। जैसे

सिय मुख समता किमि करै चन्द वापुरों रंक।

सीताजी के मुख (उपमेय) की तुलना बेचारा चंद्रमा (उपमान) नहीं कर सकता। उपमेय की श्रेष्टता प्रतिपादित होने से यहाँ प्रतीप अलंकार है।

10. दृष्टांत - जहाँ उपमेय, उपमान और साधारण धर्म का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता है, जैसे-

बसै बुराई जासु तन, ताही को सन्मान।

भलो भलो कही छोड़िए, खोटे ग्रह जप दान।।

यहाँ पूर्वार्द्ध उपमेय वाक्य और उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है। इनमें 'सन्मान होना' और 'जपदान करना' ये दो भिन्न-भिन्न धर्म कहे गए हैं। इन दोनों में बिम्ब - प्रतिबिम्ब भाव है। अतः दृष्टांत अलंकार है।

छंद

अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा गणना तथा यति-गति के संबद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना 'छंद' कहलाती है जैसे चौपाई, दोहा, गायत्री, छंद इत्यादि। छंद के अंग इस प्रकार है

छंद में प्राय :चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण को विषम चरण तथा दूसरे और चौथे चरण को समचरण कहा जाता है।

छंद के निम्नलिखित अंग है।

1. चरण/पद/पाद 2. वर्ण और मात्रा 3. संख्या क्रम और गण 4. लघु और गुरु

5. गति 6. यति / विराम 7. तुक

गण का नाम

	गण		चिन्ह	उदाहरण
1.	**यगण**	**यमाता**	**ISS**	**नहाना**
2.	**मगण**	**मातारा**	**SSS**	**आजादी**
3.	**तगण**	**ताराज**	**SS I**	**चालक**
4.	**रगण**	**राजभा**	**S IS**	**पालना**
5.	**जगण**	**जभान**	**IS I**	**करील**
6.	**भगण**	**भानस**	**S I I**	**बादल**
7.	**नगण**	**नसल**	**I I I**	**कमल**
8.	**सगण**	**सलगा**	**I I S**	**गमला**

1.वार्णिक छंद - वर्णगणना के आधार पर रचा गया छंद कहलाता है। जैसे घनाक्षरी, दण्डक आदि।

2. मात्रिक छंद - मात्राओं की गणना पर आधारित छंद मात्रिक छंद कहलाते हैं। यह गणबद्ध नहीं होता। दोहा और चौपाई मात्रिक छंद है।

1. चौपाई - यह मात्रिक सम छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। इसमें चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं। जैसे :

I I I I S I S I I I S I I I I IS I I IS I IS I I

जय हनुमान ग्यान गुन सागर। जय कपीस जिहुलोक उजागर।।

राम दूत अतुलित बलधामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा।।

I IS I S I I I I I I ISS S I IS I I I I I ISS

2. दोहा - यह मात्रिक अर्द्ध सम छंद है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 13 मात्राएं और द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11 मात्राएँ होती हैं। जैसे -

S I I I I I I S I I I I I I I I I I I S I

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।

बरनउं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारी।।

I I I I I I I I I I I I ISS I I I IS I

3. सोरठा - यह मात्रिक अर्द्धसम छंद है। इसके विषम चरणों में 11 मात्राएँ एवं सम चरणों में 13 मात्राएँ होती है। तुक प्रथम एवं तृतीय चरण में होती है। इस प्रकार यह दोहे का उल्टा छंद है। जैसे -

S I S I I I S I IS I I I I IS I I I

कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुनायतन।

जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।।

S I S I I IS I I I I I SS I I I I I

4. कवित्त - वार्णिक समवृत्त छंद जिसमें 31 वर्ण होते हैं। 15-16 पर यति तथा अंतिम वर्ण गुरु होता है। जैसे सहज विलास हास पिकी हुलास तजि। - 16 मात्राएँ ।

दुख के निवास प्रेम पास पारियत है। – 15

5. गीतिका - मात्रिक सम छंद है जिसमें 26 मात्राएँ होती हैं। 14 और 12 पर यति होती है तथा अंत में लघु गुरु का प्रयोग है। जैसे - मातृ भूसी मातृ भू है, अन्य से तुलना नहीं।

6. रोला - मात्रिक सम छंद है, जिसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं तथा 11 और 13 पर यति होती है। प्रत्येक चरण के अंत में दो गुरु या दो लघु वर्ण होते हैं। दो-दो चरणों में तुक आवश्यक है। जैसे

I I I ISS I I IS ISS I I I IS

नित नव लीला ललित ठानि गोलोक अजिर में।

रमत राधिका संग रास रस रंग रुचिर में।

I I IS ISS I S I I IS I I I IS

7. बरवै - यह मात्रिक अर्द्धसम छंद है जिसके विषम चरणों में 12 और सम चरणों में 7 मात्राएँ होती हैं। यति प्रत्येक चरण के अंतमें होती है। सम चरणों के अंत में जगण या तगण होने से बरवै की मिठास बढ़ जाती है। जैसे -

ऽ। ऽ।।। ऽ।।।ऽ।ऽ।

वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।

सरद सुवारिद में जनु, तडित बिहार।।

।।। ।ऽ।। ऽ।।।।। ।ऽ।

8. हरिगीतिका - यह मात्रिक सम छंद हैं। प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। यति 16 और 12 पर होती है तथा अंत में लघु और गुरु का प्रयोग होता है। जैसे -

कहते हुए यो उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।

हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।

।। ऽ।ऽ ऽऽ।ऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।ऽ

9. कुण्डलिया - मात्रिक विषम संयुक्त छंद है जिसमें छः चरण होते हैं। इसमें एक दोहा और एक रोला होता है। दाहे का चौथा चरण रोला के प्रथम चरण में दुहराया जाता है तथा दोहे का प्रथम शब्द ही रोला के अंत में आता है। इस प्रकार कुण्डलिया का प्रारंभ जिस शब्द से होता है उसी से इसका अंत भी होता है। जैसे

ऽऽ ।।ऽ ऽ।ऽ ।।ऽ।।ऽ ऽ।

सांई अपने भात को, कबहुं न दीजै त्रास।

पलक दूरि नहिं कीजिए, सदा राखिए पास।।

सदा राखिए पास, त्रास कबहुं नहिं दीजै।

त्रास दियौ लंकेश ताहि की गति सुनि लीजै।।

कह गिरिधर कविराय राम सौ मिलिगौ जाई।

पाय विभीषण राज लंकपति बाज्यौ सांई।।

ऽ । ।ऽ।। ऽ।ऽ।।। ऽऽऽऽ